B.A I (Hons) Sub
I Paper भारतीय दर्शन
सांख्य दर्शन - ईश्वरवाद

सांख्य दर्शन के सम्बन्ध में सामान्यतः यह मान्यता है कि यह एक ईश्वरवादी सम्प्रदाय है। अनीश्वरवाद उसे माना है जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है लेकिन इसके विपरीत कुछ अनुयायियों का मत है कि सांख्य-दर्शन में ईश्वरवाद की मीमांसा की गयी है। इस मत के मानने वालों का कहना है कि सांख्य-सूत्र में ईश्वर वाद का समर्थन करता है।

ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए ईश्वरवादियों का कथन है कि संसार कार्य श्रृंखला है। अतः उसके कारण के रूप में ईश्वर को मानना अपेक्षित है। जिस प्रकार न्याय, वैशेषिक ईश्वर को सम्पूर्ण विश्व के निमित्त कारण के रूप में स्वीकार करता है। उसी प्रकार सांख्य भी स्वीकार करता है कि ईश्वर भी सम्पूर्ण विश्व का निमित्त कारण है और ईश्वर के अभाव में प्रकृति के क्रिया कलापों की व्याख्या नहीं की जा सकती।

कुछ विद्वानों ने प्रकृति के क्रिया कलापों के विरुद्ध आक्षेप उठाते हुए यह कहा है कि प्रकृति अचेतन है

और अचेतन प्रकृति किसी चेतन सत्ता के अभाव में अपने क्रिया कलापों को सम्पादित नहीं कर सकती है अतः प्रकृति के संचालन के लिए अनंत प्रकृति भी चेतन के अभाव में विश्व का कारण नहीं हो सकता ।

कुछ ऐसे विचारक हैं जो सांख्य को ईश्वरवादी मानते हैं जिनमें प्रधान विज्ञान भिक्षु तथा वाचस्पति मिश्र इत्यादि आते हैं इनका कहना है कि ईश्वर शाश्वत तथा पूर्ण सत्ता है जो सम्पूर्ण विश्व का स्वामी है जो अपने उपस्थिति मात्र से प्रकृति को उसी रूप में गतिशील करता है जिस रूप में चुम्बक अपनी उपस्थिति मात्र से लोहा को गतिशील करता है

न्याय ईश्वर को वेद स्रष्टा कहा है परन्तु सांख्य इसका विरोध करता है क्योंकि वेद अपौरुषेय (Impersonal) है जब वेद अपौरुषेय है तो वेद का स्रष्टा ईश्वर को कहना गलत है अतः वेद के रचयिता के रूप में ईश्वर को मानना समीचीन नहीं है सांख्य को ईश्वरवादी प्रमाणित करने के लिए विज्ञानभिक्षु का नाम विशेष रूप से लिया जाता है — विज्ञान भिक्षु का कहना है कि सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल ने ईश्वर के अस्तित्व को इस लिए अस्वीकार किया है कि अगर कोई सिद्ध ईश्वर

के सम्बन्ध में जिज्ञासा रह जाती है तो वह विवेक ज्ञान को नहीं प्राप्त कर सकता जो मोक्ष के लिए आवश्यक है।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि सांख्य ईश्वर के अस्तित्व का खण्डन करता है। ईश्वरवादी विज्ञानभिक्षु तथा वाचस्पति मिश्र ने सांख्य को अनीश्वरवादी नहीं बल्कि ईश्वरवादी माना है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि कुछ दार्शनिक सांख्य को ईश्वरवादी मानते हैं लेकिन इसके बारे में सामान्य मान्यता यही है कि यह एक अनीश्वरवादी दर्शन है। सांख्य का अनीश्वरवाद प्रकृति तथा पुरुष के द्वैत का परिणाम है। सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या पुरुष और प्रकृति के द्वारा स्वतन्त्र रूप से की जा सकती है। इसके लिए ईश्वर के अस्तित्व की आवश्यकता नहीं है अतः सांख्य एक अनीश्वरवादी दर्शन है।